Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 3, April-2022, ISSN 2230-7540

भारतीय समाज में बौद्ध शिक्षा का स्वरूप

डॉ. सत्येन्द्र सिंह

एसो॰ प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, जनता वैदिक कॉलिज, बड़ौत (बागपत)

ई-मेलः satyendra.jvc@gmail.com

सारांश - उत्तर वैदिक काल में सामाजिक-धार्मिक कर्मकाण्डों की प्रधानता होने के कारण जन-जीवन जटिल होने लगा था। समाज अनेक वर्गों में बट गया था तथा निम्न वर्गों को शिक्षा से वंचित रखा जाने लगा था। उसके बाद बौद्ध धर्म का उदय हुआ। बौद्धकालीन शिक्षा ईसा पूर्व 5वीं शताब्दी से अस्तित्व में आई महात्मा बुद्ध ने वैदिक कालीन शिक्षा की बुराइयों को दूर करते हुए इस शिक्षा की शुरूआत की। यह सभी वर्गों के लिये थी। बौद्ध शिक्षा मानव के धर्म की अपेक्षा मानव के कर्म को महत्व देती थी। बौद्ध दार्शनिकों ने उचित शिक्षा के लिये अनेक प्रभावी शिक्षण विधियों का विकास किया, बौद्धों ने सभी को नियमों का पालन करने का उपदेश दिया है और इसी को वे अनुशासन कहते हैं। बौद्ध शिक्षा की अनुशासन सम्बन्धी यह अवधारणा आज लोकतन्त्रीय जीवन के लिये बड़ी आवश्यक है। लोकतंत्र की सफलता तो इसी बात पर निर्भर करती है कि सब अपने-अपने कत्र्तव्यों का पालन ईमानदारी और निष्ठा के साथ करें।

कीवर्ड - भारतीय समाज, बौद्ध शिक्षा

----------X----------

परिचय

भारत में वैदिक काल के बाद बौद्ध काल का उद्भव हुआ। किसी भी देश का इतिहास उठाकर देखिये। जब कोई विचार धारा अति को पार करती है तो दूसरी विचार धारा का जन्म होता है। हमारे देश में भी ऐसा ही हुआ है। जब उत्तर वैदिक काल में कठोर वर्ण व्यवस्था और कर्म काण्ड की अति हुयी तो इसका विरोध प्रारम्भ हुआ। यह विरोध बहुत पहले चारवाक और आजीवकों ने शुरू कर दिया था परन्तु उनके अपने विचारों के पीछे कोई ठोस दर्शन नहीं था। इसलिये उनका प्रभाव जिस तेजी से बढ़ा उसी तेजी से समाप्त हो गया। 563 ई.पू. भारत की इस पुण्य भूमि पर महात्मा बुद्ध का अवतरण हुआ। वे राज घराने में पैदा हुये थे और उन्हें सभी सुख सुविधायें उपलब्ध थी परन्तु उन्होंने लोगों के शारीरिक दुःखों को समाप्त करने के लिये बौद्ध धर्म की स्थापना की ओर यही से बौद्ध शिक्षा का प्रारम्भ हुआ।

वैदिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षा का प्रशासन गुरुओं के हाथों में था, बौद्ध शिक्षा प्रणाली बौद्ध संघों के केन्द्रीय नियन्त्रण में थी। और अभी भी यह राज्य के नियन्त्रण से मुक्त थी, परन्तु इसमें केन्द्रीय नियन्त्रण का शुभारम्भ हो गया था। आज यह राज्य के केन्द्रीय नियन्त्रण में है। इसे हम बौद्ध शिक्षा प्रणाली की देन मानते हैं। बौद्ध काल में शिक्षा को राज्य का संरक्षण प्राप्त हुआ; आज वह पूर्ण रूप से राज्य का उत्तरदायित्व हो गई है। इसे भी बौद्ध शिक्षा की देन माना जा सकता है। बौद्ध शिक्षा प्रणाली में प्राथमिक शिक्षा निःशुल्क थी और उच्च शिक्षा में शुल्क लिया जाता था। हमारी आज की शिक्षा प्रणाली में भी ऐसा ही है। यह भी बौद्ध शिक्षा प्रणाली की देन है।

बौद्ध शिक्षा का अर्थ:

बौद्ध दर्शन के अनुसार जीवन में दुःख ही दुःख है और इन दुःखों को समझना तथा दुःखों को दूर करने के उपायों का उपयोग करना ही बोध कहा गया है। वास्तव में यही बौद्ध-दर्शन की शिक्षा है। शिक्षा दुःखों का ज्ञान है और दुःखों को दूर करने का अष्टांग मार्ग प्रदान करती है। जब यह बोध अथवा अनुभूति होती है और इससे मुक्ति पाने के लिए जो प्रयास किया जाता है, वही शिक्षा कहलाती है। अतः शिक्षा व्यहारिक तथा आध्यात्मिक जीवन में आर्य सत्य देने वाली तथा सद्मार्ग की ओर अग्रसर करने वाली प्रक्रिया है। बौद्ध-दर्शन के अनुसार आत्म-बोध या आत्म-

www.ignited.in

ज्ञान ही वास्तव में शिक्षा है। निर्वाण की अवस्था तक शिक्षा प्रक्रिया पहुँचती है। महात्मा बुद्ध ने अपनी दार्शनिक विचारधारा को चार आर्य सत्य के रूप में व्यक्त किया। शिक्षा की प्रक्रिया की दृष्टि से इन्हें शिक्षा के चार सोपान भी कहा जा सकता है, ये इस प्रकार हैं-

1- सांसरिक जीवन दुःखों से परिपूर्ण है।

2- दुःखों का कारण है।

3- दुःखों का अन्त सम्भव है।

4- दुःखों के अन्त का उपाय है।

बौद्ध-शिक्षा के उद्देश्यः-

बौद्ध-शिक्षा के उद्देश्य बौद्ध-शिक्षा के अन्तर्गत मन-वचन-कर्म तीनों के विकास पर बल दिया जाता है। अतः शिक्षा के उद्देश्यों का यही आधार है-

1. **सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करनाः-** बौद्ध-शिक्षा के तीन पक्षों का विकास करती है- ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक। इन तीनों पक्षों के विकास के लिए अष्टांग मार्ग का उपयोग किया जाता है। इन मार्गों का समन्वित लक्ष्य 'सम्पूर्ण व्यक्ति का विकास करना है।

2. **नैतिक आचरणों का विकास करनाः-** बौद्ध-दर्शन के अष्टांग मार्ग के अन्तर्गत सैद्धान्तिक पक्ष की अपेक्षा व्यवहारिक पक्ष की प्रधानता है। अष्टांग मार्ग आचरण का विषय है, जिसमें नैतिक मूल्यों का विकास होता है। बौद्ध-दर्शन के साथ बौद्ध धर्म भी है। धर्म के अन्तर्गत नैतिक आचरणों को विशेष महत्व दिया जाता है।

3. **सांस्कृतिक विकास करनाः-** बौद्ध धर्म के अन्तर्गत भारतीय संस्कृति को ही महत्व दिया गया है और उसी का बौद्ध धर्म में प्रचार तथा प्रसार हुआ।

4. **सामाजिक विकास करनाः-** बौद्ध धर्म सामाजिक आचार-विचार की शिक्षा देता है, जिससे व्यक्तियों में सामाजिक योग्यताओं तथा क्षमताओं का विकास होता है।

5. **निर्वाण की प्राप्ति करनः-** बौद्ध शिक्षा का यह महत्वपूर्ण उद्देश्य है, इसका अर्थ होता है अनन्त शान्ति प्राप्त करना। इसके परिणामस्वरूप काम, क्रोध, तृष्णा तथा जन्म-मरण के दुःखों का अन्त हो जाता है तथा अनन्त सुख आनन्द की प्राप्ति होती है।

6. **सम्बोधि का विकास करनाः-** बौद्ध शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य सम्बोधि या आन्तरिक जागृति करना है। सभी प्रकार की शिक्षा आन्तरिक जागृति की ओर उन्मुख करती है।

बौद्ध-दर्शन की शिक्षा में शारीरिक और आध्यात्मिक विकास को महत्व नहीं दिया गया है। जबकि शरीर सभी का साधन होता है। शरीर के स्वस्थ होने से ही मन के विचार भी स्वस्थ रहते हैं।

बौद्ध-शिक्षा का विभिन्न स्तरों में विभाजन:

वैदिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षा को दो ही स्तरों में बाँटा गया था। प्राथमिक एवं उच्च, बौद्ध शिक्षा प्रणाली में इसे तीन स्तरों में बाँटा गया- प्राथमिक, उच्च और भिक्षु शिक्षा। इसी नींव पर अब वह मनोवैज्ञानिक दृष्टि से पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च और विशिष्ट, अनेक स्तरों में विभाजित है।

बौद्ध-शिक्षा की विशेषताएँ:

यदि आप ध्यानपूर्वक देखें-समझें तो स्पष्ट होगा कि वैदिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षा के जो उद्देश्य निश्चित किए गए थे, वही उद्देश्य बौद्ध शिक्षा प्रणाली में निश्चित किए गए, बस अन्तर इतना हुआ कि बौद्ध शिक्षा प्रणली में कला-कौशल एवं व्यवसायों की शिक्षा पर अपेक्षाकृत अधिक बल दिया जाने लगा था। बौद्ध शिक्षा प्रणाली के अनुसार आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भी इनकी शिक्षा पर अधिक बल दिया जाता है। यह देन बौद्ध शिक्षा प्रणाली की ही है।

शिक्षा की अति विस्तृत पाठ्यचर्या और अति बारीक विशिष्टीकरण:

प्राथमिक स्तर पर समान पाठ्यचर्या और उच्च स्तर पर विशिष्ट पाठ्यचर्या के निर्माण की नींव वैदिक शिक्षा प्रणाली में ही रख दी गई थी परन्तु बौद्ध शिक्षा प्रणाली में इसे और अधिक बारीकी से देखा-समझा गया और उच्च स्तर पर अनेक अन्य विशिष्ट पाठ्यक्रम शुरू किए गए। इस प्रकार इसकी नींव तो वैदिक शिक्षा प्रणाली में

रखी गई परन्तु इसका विकास बौद्ध शिक्षा प्रणाली में हुआ।

कक्षा शिक्षण और स्वाध्याय का शुभारम्भ:

शिक्षण के क्षेत्र में बौद्ध शिक्षा प्रणाली की आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली को पहली देन यह है कि उसने लोकभाषा (पाली) को शिक्षा का माध्यम बनाया, आज उसी आधार पर मातृभाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाया गया है। दूसरी देन यह है कि उसने कक्षा (सामूहिक) शिक्षण का शुभारम्भ किया और तीसरी देन यह है कि स्वाध्याय विधि का विकास किया। स्वाध्याय विधि के लिए पुस्तकालयों का निर्माण सर्वप्रथम बौद्ध शिक्षा प्रणाली में ही शुरू हुआ था। आज तो पुस्तकालयों को शिक्षकों का पूरक माना जाता है।

गुरु-शिष्यों के बीच मधुर सम्बन्धों की निरन्तरता:

बौद्ध काल में गुरु और शिष्य दोनों बौद्ध संघों के अनुशासन में रहते थे, दोनों एक-दूसरे के प्रति अपने कत्र्तव्यों का निष्ठा से पालन करते थे। गुरु शिक्ष्यों के प्रति समर्पित थे और शिष्य गुरुओं के प्रति समर्पित थे। दोनों के बीच बहुत पवित्र और मधुर सम्बन्ध थे। हमारे देश में इस समय शिक्षक और शिक्षार्थियों के बीच इतने अच्छे सम्बन्ध तो नहीं है परन्तु हम उनसे यह अपेक्षा अवश्य करते हैं कि शिक्षक शिक्षार्थियों के प्रति समर्पित हो और शिक्षार्थी शिक्षकों का सम्मान करें।

विद्यालयी शिक्षा का शुभारम्भ:

बौद्ध शिक्षण प्रणाली में शिक्षा की व्यवस्था बौद्ध मठों एवं विहारों में की गई, यह विद्यालयी शिक्षा का शुभारम्भ था। इन मठों एवं विहारों में बड़े-बड़े शिक्षण कक्ष थे, इनमें छात्र एक साथ बैठकर पढ़ते थे। इस प्रकार इस प्रणाली में कक्षा शिक्षण का शुभारम्भ किया गया इन बौद्ध मठों एवं विहारों में भिन्न-भिन्न कक्षाओं को भिन्न-भिन्न विषय भिन्न-भिन्न शिक्षक (विषय विशेषज्ञ) पढ़ाते थे। यह बहुशिक्षक प्रणाली एवं विषय विशेषज्ञों द्वारा शिक्षण का शुभारम्भ था। आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली के विकास में बौद्ध शिक्षा प्रणाली की यह आधारभूत देन है।

जन शिक्षा की शुरूआत:

बौद्धों ने सभी वर्गों के बच्चों को शिक्षा का अधिकार दिया। साथ ही प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था मठों एवं विहारों में की। यह जन शिक्षा के क्षेत्र में पहला कदम था। परन्तु न तो उन्होंने शिक्षा को अनिवार्य किया और न शिक्षा को सर्वसुलभ बनाया। उन्होंने सबको शिक्षा का अधिकार तो दिया। आज अधिकार के साथ-साथ सुविधा प्रदान करने का भी प्रयत्न किया जा रहा है।

स्त्री-पुरुषों को समान शिक्षा:

बौद्ध शिक्षा प्रणाली में स्त्रियों की शिक्षा की समुचित व्यवस्था नहीं की गई थी और साथ ही उनके लिए पुरुषों की भाँति इतने कठोर नियम बना दिए गए थे कि बहुत कम बालिकाएँ ही मठों एवं विहारों ने प्रवेश लेती थी, परन्तु स्त्रियों को पुरुषों की भाँति किसी भी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने की शुरूआत इस प्रणााली में कर दी गई थी। आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली को यह उसकी बड़ी देन है।

कला-कौशल एवं व्यावसायिक शिक्षा पर बल:

बौद्धों ने सभी कला-कौशलों और व्यवसायों को सम्मान की दृष्टि से देखा और अपनी शिक्षण प्रणाली में इन सबकी शिक्षा की समुचित व्यवस्था की। आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली में भी ऐसी व्यवस्था है। यह बौद्ध शिक्षा प्रणाली की ही देन मानी जानी चाहिए।

धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा की निरन्तरता:

वैदिक शिक्षा प्रणाली में वैदिक धर्म की शिक्षा अनिवार्य थी, बौद्ध शिक्षा प्रणाली में बौद्ध धर्म की शिक्षा अनिवार्य थी, आज इन दोनों शिक्षा प्रणालियों के विपरीत हमारी आधुनिक शिक्षा प्रणाली में किसी भी धर्म की शिक्षा अनिवार्य नहीं है। हाँ, नैतिकता की शिक्षा को अनिवार्य रखा गया है, परन्तु यह नैतिकता किसी धर्म विशेष पर आधारित न होकर मानवीय मूल्यों पर आधारित है। शिक्षा के जिन उद्देश्यों पर बौद्धों ने बल दिया है वे मनुष्य को लौकिक एवं पारलौकिक दोनों दृष्टियों से तैयार करते हैं। नैतिक विकास के उद्देश्यों पर बौद्धों ने सर्वाधिक बल दिया है। आज शिक्षा द्वारा नैतिक विकास की बात पुनः सोची जा रही है। हमारे देश में तो आज शिक्षा जगत् में दो ही विचार सर्वाधिक महत्व के हैं-रोजगार शिक्षा और नैतिक शिक्षा।

बौद्ध दार्शनिकों ने उचित शिक्षा के लिए अनेक प्रभावी शिक्षण विधियों का विकास किया है। व्यक्तिगत शिक्षण के लिए स्वाध्याय, मनन और चिन्तन तथा सामूहिक शिक्षण के लिए व्याख्यान, व्याख्या और चर्चा विधियाँ आज भी अच्छी विधियाँ मानी जाती है। वास्तविक ज्ञान के लिए आज कुछ विद्वान शास्त्रार्थ को आवश्यक भले ही

www.ignited.in

न मानते हों परन्तु पर्यटन और सम्मेलन तो आज भी सभी को मान्य हैं।

बौद्धों ने सभी को नियमों के पालन करने का उपदेश दिया है और इसी को वे अनुशासन कहते हैं। बौद्धों की अनुशासन सम्बन्धी यह अवधारणा आज लोकतन्त्रीय जीवन के लिए बड़ी आवश्यक है। लोकतन्त्र की सफलता तो इसी बात पर निर्भर करती है कि सब अपने-अपने कत्तव्यों का पालन ईमानदारी और निष्ठा के साथ करें। शिक्षक एवं शिक्षार्थी को संयमी जीवन की सलाह देकर बौद्धों ने शिक्षा जगत को शुद्धता प्रदान की थी उसकी आवश्यकता आज भी समझी जा रही है। यदि आज के शिक्षक एवं शिक्षार्थी संयमी जीवन जीना प्रारम्भ कर दें तो जगत् की सारी समस्याएँ स्वयं हल हो जाएँ। संसार में विश्वविद्यालय जैसी संस्था की स्थापना भी बौद्धों की देन है। उनके द्वारा स्थापित तक्षशिला विश्वविद्यालय संसार का सर्वप्रथम विश्वविद्यालय था। बौद्ध दार्शनिक जन्म के आधार पर मनुष्य-मनुष्य में भेद नहीं करते इसलिए उन्होंने सबके लिए प्रारम्भिक शिक्षा का विधान किया है। स्पष्ट है कि वे जन शिक्षा के पक्षधर है। परन्तु मानसिक व बौद्धिक दृष्टि से वे मनुष्य-मनुष्य में भेद करते हैं और उच्च शिक्षा की व्यवस्था केवल मेधावी एवं योग्य छात्रों के लिए ही करते हैं। यदि आज हम भी उच्च शिक्षा के द्वारा केवल मेधावी एवं योग्य छात्रों के लिए ही खुले रखें तो निश्चित रूप से धन का दुरूपयोग रूकेगा, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों का पर्यावरण शैक्षिक बनेगा, तोड़-फोड़ और अनुशासनहीनता के स्थान पर व्यवस्था कायम होगी, शिक्षा का स्तर उठेगा और समाज को योग्यतम, चरित्रवान एवं निष्ठावान विशेषज्ञ प्राप्त होंगे। जिस लोकतान्त्रिक शिक्षा की व्यवस्था हम आज करना चाहते हैं उसकी स्थापना बौद्धों ने आज से पच्चीस सौ वर्ष पूर्व कर दी थी।

अतः वर्तमान की नींव अतीत में होती है। हमारे देश में सर्वप्रथम वैदिक शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ, वह हमारी वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली का नींव का पत्थर है। उसके बाद इस देश में बौद्ध काल में एक नई शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ जिसे बौद्ध शिक्षा प्रणाली कहते हैं। यह शिक्षा प्रणाली कुछ अर्थों में वैदिक शिक्षा प्रणाली के समान थी और कुछ अर्थों में असमान। यह शिक्षा प्रणाली मुस्लिम काल में ही समाप्त हो गई थी परन्तु यह अपने कुछ अनुकरणीय पद चिन्ह अवश्य छोड़ गई। उन्हीं को हम आधुनिक भारतीय शिक्षा के विकास में उसका योगदान मान सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- डॉ. रामशक्ल पाण्डेय, "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक की भूमिका"।
2- डॉ. आर0एस पाण्डेय, "नई शिक्षा-नीति"
3- पं. दुर्गादास व्यास, "भारतीय शिक्षा की चुनौतियाँ"
4- डॉ. गिरीश पचैरी, "भारतीय संविधान में शिक्षक की भूमिका"
5- डॉ. आर.आर. सिंह, "शिक्षा के आधारभूत सिद्धान्त"
6- डॉ. कुसुमलता राठोर, "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक"
7- शिक्षक अभिव्यक्ति, 2005-06
8- शिक्षा-नीति (1992), 1992
9- डॉ. आर.ए. शर्मा, "शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूल आधार"
10- डॉ. रमन बिहारी लाल, "शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग"
11- डॉ. एल.के. ओड, "शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि"
12- डॉ. कामत प्रसाद पाण्डेय, "शिक्षा की दार्शनिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि"
13- डॉ. गिरीश पचैरी, "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक"
14- डॉ. रमन बिहारी लाल एवं कृष्णा कान्त शर्मा, "भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ"
15- राष्ट्रीय शिक्षा आयोग, "1964 (कोठारी कमीशन प्रतिवेदन)"

Corresponding Author

डॉ. सत्येन्द्र सिंह*

एसो॰ प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, जनता वैदिक कॉलिज, बड़ौत (बागपत)